GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

डॉ. रमेश उपाध्याय की कहानियों में निरुपित जाति भेद और छुआछूत की समस्या

भावना आर. सोलंकी

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग

सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर

डॉ. रमेश उपाध्याय समकालीन हिंदी साहित्य के मुख्य रचनाकारों में एक हैं। उनके रचना कर्म में कहानी-संग्रह, उपन्यास, नाटक, नुक्कड़ नाटक, निबंध लेखन, संपादन कार्य, अनुवाद, साहित्यिक इतिहास, आलोचना, एकांकी आदि विस्तृत फलक में रचनाएँ मौजूद हैं।

भारतीय समाज में धर्म के साथ-साथ जाति और गोत्र का महत्व हजारों सालों से रहा है। जिससे मुक्ति पाना असंभव है। आज हमारे देश में जातियता एवं साम्प्रदायिकता की दग्धता फैल रही है। आज समाज में छुआ-छूत, जाति-पाति कम नहीं हुई है। राष्ट्रीय भावना से प्रेरित समाज 'हम एक हैं' का नारा लगाता है तो दूसरी ओर अपने-अपने समाज को संगठित करता हुआ दिखाई देता है। जाति भेद के कारण समाज में दरारें निर्माण हो रही हैं। समाज व्यवस्था में बदलाव लाने के लिए जाति की दीवारों का समूल उच्छेद करने की आवश्यकता है जिससे बलशाली भारत का सपना वास्तव में उतर सकता है। रमेश उपाध्याय के कहानी साहित्य में जाति-भेद और छूआछूत की समस्या को चित्रित किया है।

जाति-पाति और छुआछूत समाज में व्याप्त सामाजिक समस्याएँ हैं जो वर्ण व्यवस्था पर आधारित हैं। आरंभ से ही समाज में उच्च वर्णने निम्न वर्ण को निरंतर प्रताड़ित तथा अपमानित किया है और उन्हें अपने अधिकारों से वंचित रखा। लेखक रमेश उपाध्याय की 'दूसरी आजादी', 'सब कुछ के बावजूद', 'प्रौढ़ पाठशाला ', 'माटी मिली', 'फांसी-फंतासी' कहानियाँ जातिभेद व छुआछूत पर केन्द्रित हैं।

'दूसरी आजादी' कहानी में गाँव के ठाकुरों तथा जमींदारों द्वारा निम्न वर्ण के लोगों पर अत्याचार किया जाता है। वे उन्हें अपना नौकर बनाकर रखते हैं। कहानी में निम्न जाति के लोगों में चेतना, विद्रोह तथा आक्रोश के स्वर निरंतर दिखाई देते हैं। निम्न जाति के लोग मिलकर, संगठित होकर ठाकुरों के प्रति विद्रोह करते हैं। कहानी का एक उद्धरण है, "अगले दिन से सवर्णो के घर-घर में यह चर्चा होने लगी कि भंगी-चमार एक होकर ऊँची जाति वालों पर धावा बोलने वाले हैं।"[1]

अतः निम्न जाति के लोगों में व्याप्त चेतना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। कहानी की नारी पात्र मंगो गाँव से शहर आकर नौकरानी के रूप में काम करती है किन्तु वहाँ भी उसे हीन दृष्टि से देखा जाता है। श्री विश्वकांत

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

का भाई उससे लड़ता हुआ मंगो के प्रति अस्पृश्यता की भावना प्रकट करता है, "आप लोगों को शर्म नहीं आती कि अम्मा का चुल्हा-चौका एक चमरिया से भ्रष्ट करा रहे हैं ? चमडे के व्यापारी होने का यह मतलब है कि आप घर में भी चूडे-चमार बन जायें ?" [2]

अतः छूआछूत जैसी विकराल समस्या को लेखक ने कहानियों के पात्रों के माध्यम से स्पष्ट चित्रित किया है और साथ ही निम्न वर्ण के लोगों का विद्रोही तथा आक्रोशी स्वर पूर्ण रूप से झलकता है।

'फांसी-फंतासी' कहानी में वर्ण-व्यवस्था तथा आरक्षण जैसे मुद्दों पर विचार किया गया है। कहानी की पात्र वंदना शर्मा का पिता ब्राह्मण जाति से संबंध रखने के बावजूद अपनी बेटी का विवाह एक शूद्र लड़के से करने को तैयार हो जाता है। पिता के शब्दों में, "सुनील किसी भी जाति का हो एक नेक और शरीफ लड़का है । और सबसे बड़ी बात यह है कि वह मेरी बेटी की पसंद है। मैं ब्राह्मण हूँ, लेकिन ऐसा दकियानुस नहीं कि जात-पात के कारण अपनी बेटी की मनचाही शादी न करने दूँ।"[3] अतः शूद्र होने के कारण सुनील को उसके साथी मित्रों द्वारा अत्यधिक तंग किया जाता है। कहानी में लेखक ने व्यवस्था पर प्रश्न-चिन्ह लगाया है। सुनील के माध्यम से लेखक आरक्षण तथा जात-पात पर अपने विचार अभिव्यक्त करता हुआ कहता है, "विधि और व्यवस्था तो कहती है कि देश के सभी नागरिक स्वतंत्र और समान हैं। लेकिन ऐसा होता तो आजादी के इतने साल बाद भी समाज में ऊंच-नीच क्यों होती ? लोग अगड़े और पिछड़े क्यों होते ? आरक्षण क्यों होता ? और आरक्षण का विरोध क्यों होता ?"[4] अतः आरक्षण का संबंध जात-पात से जुड़ा है । जब तक समाज में समानता व्याप्त नहीं होगी अर्थात् ऊंच-नीच का भेद समाप्त नहीं होगा तब तक आरक्षण भी समाज में विद्यमान रहेगा।"

इसी तरह 'प्रौढ़ पाठशाला' कहानी का पात्र बलवीर गाँव के निम्न-जात के लोगों की शिक्षा हेतु ठाकुरों से लड़-झगड़कर गाँव में पाठशाला खोलने के निर्णय पर अडिग रहता है। सभी धर्मों तथा जातियों के लोगों को आपस में मिल-जुलकर पढ़ाई करने के लिए वह उन्हें निरंतर प्रेरित व उत्साहित करता है । गाँव के जमींदारों को यह बर्दाश्त नहीं होता कि निम्न जाति के लोग भी अब शिक्षा प्राप्त करने लग गए और आज वह ब्राह्मणों का उतना सम्मान नहीं करते हैं। "सबसे ज्यादा दुःखी हैं, बेचारे ब्राह्मण। प्रौढ़-पाठशाला जबसे खुली है, गाँव में उनकी इज्जत ही नहीं, आमदनी भी कम हो गयी है। पहले साठ साल का बुढ़ा भी ब्राह्मण के आठ साल के लड़के को 'पंडितजी पालागन' कहे बिना आगे नहीं जा सकता था और अब आठ साल का भंगी साठ साल के ब्राह्मण को पालागन किये बिना निकल जाता है। नमस्ते या जै हिंद करता भी है तो इस तरह कि जैसे मज़ाक उड़ा रहा हो।"[5]

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

'माटी मिली' कहानी में गाँव के लोग जात-पात एवं छूआछूत को अधिक महत्व देते हैं। कहानी का पात्र सोबरन ठाकुर और रधिया के मध्य चल रहे प्रेम प्रसंग में पंडित शिवदत्त उसे लत्ताड़ते हुए कहता है, "घर में सुंदर-सुशील बहू है, ठाकुर नेगसिंह जैसे मातबर आदमी के तुम लडके हो, हमारे अखाडे में बीस बरस ब्रह्मचारी रहकर तुमने पहलवानी और हनुमान-पूजा की है, और एक नीच कुम्हारिन में अपना ईमान बिगाड़ लिया है तुमने।"[6] पंडित की बात सुन सोबरन भड़क उठता है और उसे धमाका आता है और तुरंत वहाँ से चले जाने का आदेश देता है। अतः पंडित अत्यधिक अपमानित हो जाता है। अपने भीतर ही बदले की भावना रखते हुए पंडित शिवदत्त क्रोधित होकर वहाँ से चला जाता है। अतः ब्राह्मणों द्वारा शूद्रो को नीच दृष्टि से देखा जाता है।

इसी तरह जमींदारो द्वारा निम्न वर्ग पर अत्याचार करना, उनसे उनका हक़ छीनने के साथ ही उनसे छूआछूत तथा जात-पात का भेद रखना। इसका यथार्थ चित्रण 'बराबरी का खेल' कहानी में हुआ है। बेगारी करने के उपरान्त जब सभी खाना खाने बैठते हैं तो उनमें से कहानी का पात्र रविदत्त खाना बाँटने की बात नहीं करता और मिलकर खाना चाहता हैं किन्तु वहीं परमेश्वर नामक पात्र अपनी कट्टरवादिता व्यक्त करता हुआ उससे कहता है, "साथ खाओगे ? शरीफ होकर तुम चमारों और मुसलमानों के साथ खाओगे ?"[7] अतः इस तरह गाँव में छूआछूत और ऊँच-नीच तथा जात पात की भावना प्रबल रूप से विद्यमान है। गाँवों मे शहर की तुलना में आज भी लोगों की सोच पिछड़ी हैं। उनमें अभी भी परिवर्तन देखने को नहीं मिलता है।

'सब कुछ के बावजूद' कहानी का पात्र नौरतन जो जाति से ब्राह्मण है और अपनी मेहनत के बल पर बड़ा नाम कमाने की इच्छा रखता है। गाँव में अपने सारे खेत, जमीन छूट जाने के कारण वह शहर आकर काम करता है। ब्राह्मण जाति से संबद्ध नौरतन दूसरों की जूठन साफ करता है, महेनत मजदूरी करता है। मजबूरी वस उसे मुसलमानों के जूठे बर्तन भी धोने पड़ते हैं। नौरतन की व्यथा इस वाक्य में स्पष्ट अभिव्यक्त होती है, "पहले तो उसे यह काम बहुत बुरा लगा। ब्राह्मण होकर दूसरों के और खास तौर से मुसलमानों के जूठे बर्तन धोने पड़ेंगे? मांस-मछली तो दूर, उसे प्याज तक के नाम से घिन आती थी, लेकिन उसने अपना मन मजबूत किया और अंदर से दर्द की हूक जैसी उमड़ती हुई उबकारियों पर काबू पाते हुए खायी हुई हड्डियों वाली प्लेटें साफ करने लगा। काम गंदा, घिनौना और थकाकर चूर-चूर कर डालनेवाला था, फिर भी नौरतन उसे छोड़कर भागा नहीं।"[8] अतः बेरोजगारी के कारण ब्राह्मण नवयुवक द्वारा निम्न जात के लोगों की जूठन साफ करना, सामाजिक रूढ़ियों व प्राचीन परिपाटी को तोड़कर बदलाव या परिवर्तन की बात करना लेखक की प्रगतिशीलता का परिचायक है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

अतः हम कह सकते है कि लेखक डॉ. रमेश उपाध्याय ने अपनी कहानियों में सदियों से भारत के सुलगते प्रश्न जातिभेद और छूआछूत की समस्या को व्यक्त किया है।

संदर्भ :-

1 चतुर्दिक, रमेश उपाध्याय, पृ. 46
2 वहीं, पृ. 58
3 अर्थतंत्र तथा अन्य कहानियाँ, रमेश उपाध्याय, पृ. 61, 62
4 वहीं, पृ. 73
5 राष्ट्रीय राजमार्ग, रमेश उपाध्याय, पृ. 57, 58
6 पानी की लकीर, रमेश उपाध्याय, पृ. 141
7 वहीं, पृ. 168
8 शहर सुंदर है, रमेश उपाध्याय, पृ. 94